बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

23-07-2020

स्नातक द्वितीय खण्ड

रामनारायण प्रसाद

अ०भा० हिंदी (100)

राष्ट्र भाषा और राजभाषा में अन्तर

सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रभाषा किसी राष्ट्र की उस भाषा को कहा जाता है जो अधिसंख्य जनता द्वारा बोली समझी और लिखी जाती हो। साथ ही उस राष्ट्र के अन्य भाषा-भाषी लोग भी उसकी मान्यता दें। भारतवर्ष में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 50 करोड़ है जबकि अन्य भाषाओं के बोलने वालों की संख्या चार-पाँच करोड़ से अधिक नहीं है। हमारे देश मे हिंदी बोलने और समझने वाले देश के कोने कोने में व्याप्त है।

राष्ट्र भाषा और राजभाषा मे निम्नलिखित अंतर है -

(i) राष्ट्र भाषा का सम्बंध जन-मानस से होता है परन्तु राजभाषा का सम्बंध प्रशासन और ~~प्रशासनिक~~ प्रशासित की तथ्यात्मक माध्यम से जुड़ा होता है।

(ii) राष्ट्रभाषा स्वनिर्मित भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है परन्तु राजभाषा कुछ नियमों -परिनियमों पर आधृत होकर संचालित होती है।

(iii) राष्ट्रभाषा सामान्य जन के सुख-दुख, उल्लास - अवसाद को लिपिबद्ध करती है परन्तु राजभाषा में इसका कोई स्थान नहीं है।

(iv) राष्ट्रभाषा का व्यावहार क्षेत्र व्यापक होता है लेकिन राजभाषा का प्रयोग क्षेत्र सीमित होता है।

(v) राष्ट्रभाषा बहुसंख्यक जनता की अखिल भारतीय संपर्क एवं व्यवहार की भाषा है, परन्तु राजभाषा का क्षेत्र संकुचित होने के कारण वह केवल कामकाजी रूप में ही प्रयुक्त की जा सकती है।

(vi) राष्ट्रभाषा का सम्बंध राष्ट्रीय लोक-जीवन से होने के कारण

शिक्षित तथा अनपढ़ गँवार तक सभी के लिए प्रयुक्ति का माध्यम होता है, लेकिन राजभाषा का सम्बंध प्रशासनिक कार्य प्रणाली से होने के कारण उसका सम्पर्क प्रशासकों और कर्मचारियों तक ही सीमित है।

(vii) राष्ट्रभाषा जहाँ लोकभाषा, बुद्धि और बल की तुलना में हृदय और भावनाओं के उद्बोधन के माध्यम से समस्याओं के रागात्मक एवं काल्पनिक समाधान निकालने का प्रत्यक्ष प्रयत्न करती है वहाँ राजभाषा बौद्धिक वर्ग की निष्पत्तियों और फाइलों, पुस्तकों की दुनिया से ऐतिहासिक सन्दर्भों एवं पूर्व घटनाओं के प्रकाश में वर्तमान समस्याओं के हल ढूँढने का प्रयास करती है।

(viii) राष्ट्रभाषा का महत्व सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से मापा जाता है लेकिन राजभाषा का महत्व राजनीतिक दृष्टिकोण से आँका जाता है।

(ix) ~~सम~~ राष्ट्रभाषा केवल राष्ट्रीय हितों एवं राष्ट्रीय जीवन के स्पन्दनों, आदर्शों का अभिलेख है परन्तु राजभाषा राजनीतिक बोध से प्रेरित अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क से जुड़ी होती है।

17.05.2020

राम नारायण प्रसाद